मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 52 अंक 11 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
नवम्बर 2016 बहाई वर्ष : 173

बहाउल्लाह के पावन लेखों से चयन

यह वह युग है जब सर्वदयालु स्पष्ट प्रभुसत्ता से विभूषित ज्ञान के बादलों के बीच से अवतरित हुआ है। वह मनुष्य के कर्मों का अच्छी तरह ज्ञान रखता है। वही है वह परमेश्वर जिसकी महिमा के सम्बन्ध में किसी को भ्रम नहीं हो सकता, अगर तुम यह समझ सकते हो तो समझो...।

—बहाउल्लाह

सभी मित्रों को युगलावतारों के जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएँ

धर्म और पर्यावरण : व्याख्यान

भारत में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के कार्यकारी निदेशक एरिक सोलेम के बहाई उपासना मंदिर के दर्शनार्थ आने के अवसर पर दिल्ली स्थित बहाई उपासना मंदिर के सूचना केन्द्र में बहाई ऑफिस ऑफ पब्लिक अफेयर्स ने एक व्याख्यान का आयोजन 5 अक्टूबर, 2016 को किया। इस कार्यक्रम में सौ से भी अधिक प्रबुद्ध श्रोता उपस्थित थे।

श्री सोलेम ने अपने व्याख्यान के आरम्भ में कहा कि बहाई उपासना मंदिर बहाई धर्म की सुन्दर अभिव्यक्तियों में एक है। भारत की विविधता की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा, "भारत अपने–आप में एक चमत्कार है। दुनिया में कोई भी ऐसा देश नहीं है जहाँ इतनी विविधता पाई जाती हो और जहाँ विभिन्न धर्मों के लोग एक–दूसरे के लिए सम्मान का भाव रखते हों। यह एक अलग चमत्कार है।"

श्री सोलेम ने यह स्वीकारा कि धर्म प्रेरणा का कारण होता है और यह प्रेरणा पर्यावरण–सुरक्षा के प्रति व्यक्ति को जागरूक बनाती है तथा प्राकृतिक सम्पदा को सुरक्षित रखने का माध्यम बनती है। उन्होंने कहा कि धार्मिक नेतागण को चाहिये कि वे पर्यावरण की भी चर्चा करें, लेकिन जब धर्म का दुरूपयोग होने लगता है तो वह धर्मान्धता कहलाती है, जो फूट पैदा करती है और संघर्ष को जन्म देती है। धार्मिक संघर्ष को समाप्त करने का एक ही तरीका है कि हम समभाव और विनम्रता अपनायें तथा एक–दूसरे के धर्म का सम्मान करें।



दिल्ली स्थित बहाई उपासना मंदिर के सूचना केन्द्र में बहाई ऑफिस ऑफ पब्लिक अफेयर्स द्वारा आयोजित एक व्याख्यान में शामिल मित्रगण (इनसेट में श्री एरिक सोलेम)

श्री सोलेम ने अपना व्याख्यान यह कह कर समाप्त किया कि सभी धर्म हमें संदेश देते हैं कि हम उत्कृष्टता को अपनाये, अपने दायित्व को समझें और आने वाली पीढ़ियों को एक सुंदर भविष्य दें। उन्होंने बहाई उपासना मंदिर के इस प्रयास की सराहना की इस प्रांगण में प्राकृतिक संसाधनों का सदुपयोग किया जाता है।

उनके व्याख्यान के बाद एक सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया।

उत्तरप्रदेश में सांख्यिकी एसआरपी–3.0 कार्यक्रम का प्रशिक्षण

सांख्यिकी के महत्व को देखते हुये और इसे और अधिक सुव्यवस्थित करने के लिए क्षेत्रीय बहाई परिषद, उत्तरप्रदेश, दिल्ली एवं उत्तराखण्ड द्वारा 20 और 21 अक्टूबर 2016 को लखनऊ में सांख्यिकी को समुदाय स्तर पर व्यवस्थित करने के लिए सम्मेलन इस कार्यक्रम के द्वारा हम बहाई मित्रों व विभिन्न गतिविधियों में लगे मित्रों सभी के बारे में जानकारी रख सकते हैं। छोटे–छोटे समूहों में इसका प्रशिक्षण हुआ। छोटे समूह में प्रशिक्षण के दौरान पहले से सीखे हुए मित्रों ने इसमें मदद की, जिनमें श्री नीरज–इटौंजा, श्री



लखनऊ में आयोजित सांख्यिकी एसआरपी–3.0 के प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने वाले प्रतिभागी

का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य एसआरपी–3.0 का प्रशिक्षण देना था। इसमें 15 समुदायों से आए 22 मित्रों ने भाग लिया। सबसे पहले सभी का परिचय दिया गया, उसके उपरान्त सांख्यिकी के महत्व के बारे में चर्चा हुई कि किस तरह से यह हमारे समुदाय के विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। इससे प्लानिंग के साथ बाकी गतिविधियों के विकास में भी मदद मिलती है। सांख्यिकी को रखने के लिए अभी हम जिन साधनों का उपयोग कर रहे हैं उन पर भी चर्चा हुई। बहाई विश्व केन्द्र द्वारा दिये गये एसआरपी–3.0 कार्यक्रम के बारे में बताया गया। कुछ मित्र इस कार्यक्रम से पहले से ही परिचित थे, उन्होंने भी अपने अनुभव बाँटे। गोविन्द–सहार, श्री सर्वेश– खरगपुर व श्री सचिन–काकोरी थे। जिन समुदायों में सांख्यिकी रखने के लिए परिषद ने कम्प्यूटर दिये हैं वहाँ के मित्रों ने इस दौरान ही कुछ जानकारी इस सम्मेलन में पूरी कर ली है। क्लस्टर ग्रोथ प्रोफाइल जो हर चक्र की समाप्ति पर बनती है उसे भरने के तरीके के बारे में भी मित्रों को बताया गया। प्रशिक्षण के बाद मित्रों ने एसआरपी 3.0 को पूरा करने के लिए योजनायें भी बनाई। योजनाओं के अनुसार दिसम्बर के प्रारम्भ तक केराकत, लालगंज, झिंझक, खरगपुर, कन्नौज, काकोरी, इटौंजा, बन्थरा, कुठौन्द, सहार, आगरा, महाराजगंज, बिशवॉ, वाराणसी ये सभी समुदाय अपना डाटा पूरा कर लेंगे।

इस अंक में

पंचगणी में सहायक मण्डल सहायकों का सम्मेलन सम्पन्न

पंचगणी में सहायक मंडल सदस्य के सहायकों का एक सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें महाराष्ट्र और गोवा के 150 सहायकगण उपस्थित हुये। योजना तो थी कोई 350 मित्रों को आमंत्रित करने की, लेकिन जगह की कमी के कारण केवल 150 सहायकों को बुलाया गया।

सलाहकार श्री ओमिद सियोशानसियान ने सम्मेलन के आरम्भ में सूचना दी कि दुनिया भर में कोई 1000 सहायक मंडल सदस्य हैं, जिनमें 120 भारत में निवास करते हैं। सलाहकार ओमिद ने अपनी बातचीत अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के महत्व से शुरू की और बताया कि अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के सदस्यों की संख्या 9 है, जिनमें 5 महिलायें हैं और 4 पुरुष हैं। पूरी दुनिया में अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार मंडलों की संख्या 5 है, जिनके कुल 81 सदस्य हैं। एक अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार मंडल एशिया में है, जिसके 22 सदस्य हैं।

विभिन्न समुदायसमूहों में सहायक मंडल सदस्य सेवारत हैं। उनकी सेवा का क्षेत्र इतना विशाल है कि अपने कार्य–सम्पादन के लिये उन्हें सहायक नियुक्त करने होते हैं। उपस्थित सभी सहायकों से कुछ रोचक और मूलभूत प्रश्न पूछे गये। मसलन, बहाई कौन हैं ? बहाई क्या करते हैं ? बहाई अपने काम किस प्रकार करते हैं जिस काम की उम्मीद उनसे की जाती है अर्थात् किस प्रकार वे अपना उद्देश्य पूरा करते हैं? यह तीसरा सवाल था जिस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया गया। दरअसल, सहायक उन संस्थाओं की मदद करते हैं जो बहाउल्लाह के जन्म के दो सौ साल पूरे होने तक पाँच वर्षीय योजना के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये अथक प्रयास कर रही है।

जिन विषयों पर सम्मेलन के दौरान विचार–विमर्श किया गया उनमें प्रमुख था विश्व न्याय मंदिर का 29 दिसम्बर, 2015 का वह संदेश जिसमें क्रियात्मक प्रतिमानों को सुदृढ़ करने की चर्चा की गई है और कहा गया है कि "यदि सेवा के क्षेत्र में व्यक्तियों के साथ–साथ चलने की व्यवस्था शीघ्रता से नहीं की जाती है तो क्षमताओं के निर्माण के प्रयास में कमी रह जाती है। सहायता का एक उपयुक्त स्तर प्रोत्साहन के शब्दों से अधिक कारगर होता है।" सम्मेलन में उपस्थित सहायकों ने अपने–अपने क्षेत्र के विकास–कार्यक्रम के पहले स्तर से दूसरे स्तर तक जाने वाले समुदायसमूहों की चर्चा की और संदेश के उस भाग का हवाला देते हुये उन समुदायसमूहों की सूची सामने रखी जिन्हें विकास कार्यक्रम के तीसरे चरण में पहुंचने की पूरी सम्भावना बन रही है। इस संदर्भ में संदेश में कहा गया है कि "जैसे–जैसे विकास की प्रक्रिया सघनता प्राप्त करती जाती है, अर्थपूर्ण वार्तालाप में मित्रों के प्रयास, उन्हें व्यापक श्रेणी के लोगों को इन शिक्षाओं से परिचित कराने तथा समाज को बेहतर बनाने में अपने योगदान पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने के लिये अनेक सामाजिक अवसरों को उपलब्ध कराते हैं।" सम्मेलन के प्रतिभागियों ने वैसे समुदायसमूहों की पहचान इस संदर्भ में की। ये समुदाय हैं : मालेगाँव, कल्याण, नासिक, त्रयमकेश्वर, इगतपुरी, पुणे, कल्याण, कोल्हापुर, पंचगणी और सांगली। ये दस क्लस्टर ऐसे हैं जिनके विकास के तीसरे चरण (पी. जी.–3) में पहुँचने की सम्भावना है।

कुछ ऐसे नये समुदायसमूहों की भी पहचान की गई जहाँ विकास के पहले चरण का कार्यक्रम शुरू किया जाने वाला है। इस संदर्भ में उपर्युक्त संदेश के 29वें पेराग्राफ को पढ़ा गया, जिसमें कहा गया है कि "अग्रणी समुदायसमूहों की एक खास विशेषता होती है, सीखने का चलन, जो पूरे समुदाय में व्याप्त होता है।" ऐसे विकसित समुदाय–समूह जिनमें सौ से भी अधिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं इस प्रकार हैं, वाणी, इगतपुरी, शाहपुर, त्रिया म्बेपेठ आदि। ऐसे समुदायसमूहों की संख्या केवल महाराष्ट्र में 52 से 60 है।

सम्मेलन में इस बात पर भी बल दिया गया कि गाँवों में स्थानीय शिक्षकों की व्यवस्था की जाये ताकि शिक्षकों, अनुप्रेरकों अथवा स्टडी

शेष पृष्ठ 4 पर

रूही पुस्तक–10 के अध्ययन हेतु आयोजित हुईं बैठकों की एक झलक

• महाद्वीपीय सलाहकार श्री ओमिद सिओशानसिआन एवं प्रशिक्षण संस्थान मण्डल मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ द्वारा क्षेत्रीय स्तर पर रूही पुस्तक–10 यूनिट–1, 2 के अध्ययन हेतु एक सेमिनार का आयोजन इन्दौर में 3 से 11 सितम्बर 2016 तक किया गया, जिसमें क्षेत्रीय स्तर पर रूही पुस्तक–10 का अध्ययन सम्पन्न हुआ। इस सेमिनार में सलाहकार महोदय के मार्गदर्शन में रूही पुस्तक–10 का गहन अध्ययन किया गया। इस अध्ययन कार्यक्रम में क्षेत्र से 50 मित्रों ने भाग लिया।



इंदौर में आयोजित पुस्तक–10 के सेमिनार में भाग लेने वाले प्रतिभागी

सत्र के दौरान 'सेवा के पथ पर साथ–साथ चलना' कि महत्वपूर्ण अवधारणा को समझते हुए मित्रों ने अपने समुदायसमूहों में उन उप–क्षेत्रों को चिन्हित किया, जिन्हें आगे आने वाले समय में रिजवान 2017 से पहले हमें 50 एवं 100 से भी अधिक गतिविधियों से आगे लेकर जाना है।

इस संदर्भ में मित्रों ने पुस्तक में सीखी गई अंतर्दृष्टियों के अनुसार अपने गांव व मोहल्लों के स्तर पर मोनिका एवं रोड्रियों को चिन्हित कर विकास की योजना बनाई। संस्थान मण्डल एवं परिषद ने यह निर्णय लिया कि आने वाले समय में क्षेत्र के 13 गांव व मोहल्लों को 50 या 100 से अधिक गतिविधियों से आगे लेकर जाना है जो निम्नानुसार है –

1. भोपाल से – इद्रपुरी, कोकता, पडरिया
2. इन्दौर से – स्कीम नं. 113, बापूगांधी नगर
3. सुसेरा से – फूलपुर
4. कांकेर से – कन्हारपुरी, बेवरती, देवरी
5. सांची से – दीवानगंज
6. सान्वेर से –मांगलिया
7. नरहरपुर से – सिंगनपुर
8. नीमच से – कनावटी

उपरोक्त गांव व मोहल्लों को रिज़वान 2017 तक 50 व 100 से भी अधिक गतिविधियों से आगे ले जाने की विस्तारपूर्वक योजना बनाई गयी।

• बिहार में खगड़िया में 18 से 22 सितम्बर, 2016 को बहाई केन्द्र खटहा में "जीवंत समुदायों का निर्माण" पुस्तक संख्या–10 की इकाई एक "सेवा के पथ पर एक दूसरे के साथ–साथ चलना" का अध्ययन सहशिक्षक सर्वश्री संदीप कुमार मल्लिक एवं रान्टो कुमार के मार्गदर्शन में किया गया। ज्ञात हो कि उक्त अध्ययन शिविर में खटहा, गौछारी, गोपालपुर, विजयनगर, साहेबपुर कमाल, झिकटिया, मथुरापुर एवं शाहपुर पटोरी समुदाय के कुल 25 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की।

अध्ययन के दौरान मित्रों ने सेवा के पथ की प्रकृति व अवधारणा; एक–दूसरे के साथ देने के मायने; सीख की कार्यविधि; संबंध की प्रकृति; साथ देने के गुण, अभिवृत्ति एवं कौशल; सच्ची मित्रता; सेवा और मित्रता की परस्पर क्रियाओं के स्वरूप; प्रोत्साहन; प्रशिक्षण संस्थान मंडल की शैक्षिक प्रक्रिया के विविध रूप; प्रोत्साहन की आध्यात्मिक अवधारणा एवं तौर–तरीके; क्रिया के मार्गदर्शक तत्व, अर्थ एवं मूल्य; कार्य की समीक्षा के माध्यम से सीख; सीखने की प्रक्रिया का गति–विज्ञान; संकट एवं विजय; अलगाव के अवयव; समन्वय की योजना; सीख के केन्द्र का अनुभव; सेवा के पथ के उद्देश्य की महिमा; बच्चों, किशोरों एवं अध्ययनवृत कक्षाओं को व्यवस्थित करना; वार्तालापों के स्वरूप; सुनियोजित सघन संस्थान अभियानों की आवश्यकता एवं संस्थान संयोजक के अनुभव आदि के संदर्भ में एक नई अंतर्दृष्टि प्राप्त की अर्थात् साथ–साथ चलने की अवधारणा को लेकर अभी तक मित्रों की जो

शेष पृष्ठ 4 पर

देवलाली क्लस्टर की एक अनोखी पहल

महाराष्ट्र के देवलाली क्लस्टर में रूही पुस्तक–4 के अध्ययन के लिए 10 से 14 अक्टूबर, 2016 तक स्टडी सर्कल चलाया गया। इस दौरान गृहभ्रमण भी किया गया। जहाँ पर मित्रों ने टीचिंग कार्यक्रम का आनंद उठाया और देवलाली में 19 मित्रों ने प्रभुधर्म में अपनी आस्था व्यक्त की। अब इन मित्रों के घरों पर भक्तिपरक सभा का आयोजन होता है।

पिछले कुछ महीनों पहले विश्व के जीवन के बारे में विस्तार से बताया गया। वह सब सुनकर श्रीमती फ्रांसिस बहुत ही भावुक हो गईं और उन्होंने कहा कि बहाई मित्रगण ये उत्सव उनके स्कूल में मना सकते हैं। उन्होंने कहा कि 26 अक्टूबर को सुबह असेंबली में अपना उत्सव मनायें।

कार्यक्रम के दिन शुभेच्छा बैनर को एक टीचर बड़े ध्यान से देखने और उसको पढ़ने लगी और सभी को इस दिन की शुभकामनायें भी



सरस्वती इंग्लिश स्कूल की असेंबली में युगलावतार का जन्मोत्सव मनाते हुए देवलाली के बहाई मित्रगण और स्कूल के बच्चे तथा शिक्षकगण

न्याय मन्दिर ने आह्वान किया था कि 1 और 2 नवम्बर को दिव्यात्मा बाब और भगवान बहाउल्लाह का जन्मोत्सव मनाया जाना चाहिये। इसी संदर्भ में देवलाली के मित्रों ने इसकी तैयारी के लिए क्षेत्र के मित्रों को आमंत्रित करने के लिए योजना बनाई। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए मुख्य अतिथि के रूप में सरस्वती इंग्लिश स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती पूनम फ्रांसिस को कार्यक्रम में आमंत्रित करने का विचार किया गया।

प्रिंसिपल से मिलने जब उनके कार्यालय पहुंचे तो उन्हें अन्ना की प्रस्तुति और कुछ प्रार्थनाओं की पुस्तकें भेंट की गईं और बहाउल्लाह दे रही थीं। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित मित्रों को बहाउल्लाह के जीवन के बारे में किशोर कक्षा की एक बालिका रश्मि ने बताया। उसके उपरान्त कठपुतली का खेल दिखाया गया, जो सभी शिक्षकों को बहुत ही आध्यात्मिक लगा और उन्होंने बाद में इस पर चर्चा करने के लिए समय भी दिया।

इस कार्यक्रम से प्रभावित होकर स्कूल की प्रिंसिपल श्रीमती फ्रांसिस ने कहा कि अब प्रत्येक वर्ष हमारा स्कूल प्रशासन आपका त्यौहार मनायेगा, जिसमें कई माता–पिता को भी हम आमंत्रित करेंगे।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र/बहाई न्यूज में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

समाचारचित्र



गैर–सरकार संगठन पारवी द्वारा 22 अक्टूबर, 2016 को नई दिल्ली में, पेरिस समझौते में जलवायु परिवर्तन और तैयारी के लिए उठाये गए मुद्दों के समाधान पर एक उच्च स्तरीय प्री सीओपी–22 परामर्श में, बहाई समुदाय का प्रतिनिधित्व डॉ. ए. के. मर्चैंट ने किया। इसमें, जलवायु परिवर्तन और सतत विकास की चिंताओं पर काम कर रहे संगठनों, प्रमुख नागरिकों, मीडिया, नीति निर्माताओं ने भाग लिया। सीओपी–22 के विभिन्न पहलुओं पर अन्य वक्ताओं के साथ–साथ डॉ. मर्चैंट को भी बोलने का अवसर मिला। यूरोपीय संघ के राजदूत महामहिम तोमसज़ कोज़लोवस्की और माननीय मंत्री श्री अनिल महादेव दवे ने बहाई दृष्टिकोण की सराहना की।



बिहार में खगड़िया क्लस्टर में विजयनगर समुदाय के श्री हीरालाल की सुपुत्री सुश्री खुशबू और नवगछिया क्लस्टर के कालूचक समुदाय के श्री मोनू कुमार सुपुत्र स्वर्गीय परमानंद सिंह का विवाह 9 मई, 2016 को उत्तरी जमालपुर स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

बहाई विश्व केन्द्र में आई.टी. प्रोफेशनल की ज़रूरत

बहाई विश्व केन्द्र में लगातार आई. टी. प्रोफेशनल्स की ज़रूरत महसूस की जाती है। इस विषय के स्नातक और अनुभवी लोगों से आवेदन आमंत्रित किये जाते हैं। आवेदक के पास पर्याप्त कार्यकुशलता तथा इन्फॉर्मेशन टेक्नॉलॉजी से सम्बन्धित प्रशिक्षण का प्रमाण–पत्र होना चाहिये, जिसमें डाटाबेस का रख–रखाव तथा सिस्टम्स इंजीनियरिंग, प्रोग्रामिंग और सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट का ज्ञान होना आवश्यक है। साथ ही, आई. टी. आर्किटेक्चर, बिजनेस एनालिसिस, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट, इन्फॉर्मेशन सिक्यूरिटी, आई. टी. इन्फ्रास्ट्रक्चर, एप्लिकेशंस सपोर्ट, डाटा प्रोसेसिंग, डेस्क्टॉप सपोर्ट ऑपरेशन्स और सम्बन्धित शिक्षण प्राप्त व्यक्ति ही आवेदन करें।

बहाई विश्व केन्द्र स्थित सूचना सेवा प्रभाग एक मिश्रित इकाई है, जो बहाई विश्व केन्द्र के आई. टी. सिस्टम और नेटवर्क्स के विकास, अभिकल्पना, रख–रखाव और संचालन सम्बन्धी कुशलता के विकास के लिये उत्तरदायी है।

प्रभाग सॉफ्टवेयर सिस्टम के अनेक प्लेटफार्म के रख–रखाव के लिये भी उत्तरदायी है, जिसमें दस्तावेज–प्रबंधन, सम्पत्ति–प्रबंधन, मानव संसाधन प्रबंधन और सुरक्षा जैसे विषय शामिल हैं।

अगर आप बहाई विश्व केन्द्र में इस क्षेत्र में सेवा देने के इच्छुक हैं तो दो से पाँच वर्षों की सेवावधि के लिये आवेदन कर सकते हैं। आवेदन फॉर्म (https://bahai.bwc.org/service/begin.aspx) पर उपलब्ध हैं। आप serve@bwc.org पर भी अधिक जानकारी के लिये ऑफिस ऑफ पर्सोनेल से सम्पर्क कर सकते हैं।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

इम्फाल में युवा सम्मेलन का आयोजन

इम्फाल के विज़न फाउण्डेशन स्कूल के परिसर में 17 और 18 सितम्बर को दो दिवसीय युवा सम्मेलन का आयोजन स्थानीय आध्यात्मिक सभा, इम्फाल द्वारा किया गया, जिसमें 31 युवाओं ने इम्फाल, कोंगबा और खुराई समुदायसमूहों से हिस्सा लिया।

सम्मेलन के आरम्भ में प्रतिभागी युवाओं ने विश्वव्यापी युवा सम्मेलनों के दौरान तैयार की गई पाठ्य सामग्रियों में "युवावस्था की अवधि" और "प्रारम्भिक किशोरावस्था" का अध्ययन किया, जिनमें इस बात पर बल दिया गया है कि सेवा को समर्पित जीवन बिताने के लिये युवाओं को खुद को फौलाद बना लेना चाहिये, क्योंकि सेवा के माध्यम से युवा एक ऐसे जीवन को बढ़ावा देना सीख सकते हैं जिसमें जीवन के विभिन्न पहलू एक–दूसरे के पूरक होते हैं। इस बात पर भी विचार किया गया कि युवाओं पर रचनात्मक और विनाशक सामाजिक शक्तियों का प्रभाव पड़ता है; इसलिये ये शक्तियाँ इस आयु वर्ग को विशेष बना देती हैं।

उपर्युक्त दो विषयों पर तैयार की गई सामग्री को पढ़ने में सहयोग दिया वैखोम रोजित और कोइजाम ऐहनलीमा ने। इन दो मित्रों के साथ सतीश और खेलजीत थोंग्राम ने सम्मेलन के दूसरे दिन की शाम से शुरू किये गये "आध्यात्मिक जीवन : एक चिन्तन" नामक रूही पुस्तक एक के अध्ययन में भी प्रतिभागियों को सहयोग प्रदान किया।

सम्मेलन के दौरान विभिन्न प्रतिभागियों ने अपने–अपने अनुभव, समझ और विचार प्रस्तुत कर सम्मेलन को रोचक तथा जीवंत बनाये रखा।

छोटे और बड़े समूहों में युवाओं द्वारा सहकारी खेल खेले गये और उन्होंने गीत भी गाये।



इम्फाल में आयोजित युवा सम्मेलन के कुछ प्रतिभागी

जब सम्मेलन समाप्त हुआ तब इम्फाल की आध्यात्मिक सभा ने सभी ट्यूटर और सहायक मंडल सदस्यों की एक बैठक बुलाकर परामर्श किया कि सम्मेलन के प्रतिभागी युवाओं के साथ किस प्रकार सम्पर्क बनाये रखा जा सकता है और सिलसिलेवार ढंग से रूही पुस्तकों का अध्ययन करने में कैसे उन्हें सहयोग प्रदान किया जा सकता है। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि पाँच स्थानों पर रूही पुस्तकों का अध्ययन चलाया जायेगा। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए स्थानीय आध्यात्मिक सभा ने सभी मित्रों का आभार व्यक्त किया।

पंचगणी में सहायक मण्डल सहायकों का सम्मेलन सम्पन्न

पृष्ठ 2 का शेष

सर्कल के ट्यूटरों को लम्बी यात्रा न करनी पड़े। इन स्थानीय शिक्षकों की मदद से कम–से–कम दस ऐसे व्यक्ति तैयार किये जायेंगे, जिन्होंने रूही पुस्तक एक का अध्ययन पूरा कर लिया है।

सम्मेलन के दौरान सहायकों ने योजना भी बनाई जिसमें 19–दिवसीय सहभोज सभा के आयोजन से लेकर बाब और बहाउल्लाह के जन्मोत्सव तक का कार्यक्रम सुझाया गया।

सम्मेलन के दौरान विश्व न्याय मंदिर का 23 मई, 2016 का संदेश जब पढ़ा गया और उस पर विचार–विमर्श के बाद पायनीयरिंग के लिये आह्वान किया गया तब 57 लोग इस सेवा के लिये उठ खड़े हुये। इनके अलावा कुछ ऐसे मित्र भी सम्मेलन में थे जो स्वयं तो नहीं जा सकते थे, लेकिन जिन्होंने पायनीयरों को हर सम्भव सहायता देने का आश्वासन दिया।

विश्व न्याय मंदिर के 18 मई, 2016 के संदेश को पढ़ने के बाद उपस्थित सहायकों ने संकल्प लिया कि 48 घंटों के जन्मोत्सव कार्यक्रम में 1 और 2 नवम्बर को समाज के विभिन्न वर्गों को अलग–अलग आमंत्रित करेंगे गाँव के गली–कूचों में उत्सव मनायेंगे, लोगों के घरों में जायेंगे और कम–से–कम 48 घरों में अनिवार्य प्रार्थना कंठस्थ करवायेंगे। कुछ समुदायों ने बड़े कार्यक्रम की योजना भी बनाई है, जिसकी जानकारी सम्मेलन के प्रतिभागियों को दी गई।

वर्तमान समाज में हो रहे नैतिक पतन को ध्यान में रखते हुये बहाई लेखों से कुछ अंश का पाठ करने के बाद एक शुद्ध तथा पवित्र जीवन के बहाई मापदंड पर चर्चा की गई। ज्ञातव्य है कि सम्मेलन में उपस्थित अधिकांश प्रतिभागी युवा थे, इसलिये बड़ी दिलचस्पी के साथ उन्होंने इस विषय पर चर्चा की।

कुल मिलाकर पूरा सम्मेलन काफी उत्साहवर्धक और रोचक रहा। उम्मीद की जाती है कि सहायकों का यह सम्मेलन अच्छे परिणाम देगा और सहायकों को अधिक सक्रिय तथा सबलित करेगा।

रूही पुस्तक–10 के अध्ययन हेतु आयोजित हुई बैठकों की एक झलक

पृष्ठ 2 का शेष

समझ थी, उसने इस पुस्तक के अध्ययनोपरांत एक नए क्षितिज को प्राप्त किया है।

विदित हो कि अध्ययन के दौरान प्रतिभागी जो कि सम्प्रति मानव संसाधन के रूप में सेवा अर्पित कर रहे हैं, ने अपने–अपने व्यवहारिक अनुभवों को साझा किया तथा इन अनुभवों के माध्यम से उपरोक्त अंतर्दृष्टि को समझने का प्रयास किया। इसी कड़ी में बताते चलें कि इस कक्षा में अधिकांश प्रतिभागी युवा थे, जिन्होंने काफी उत्साह के साथ अध्ययन में भाग लिया तथा सहशिक्षकों द्वारा प्रत्येक दिन अध्ययनोपरांत संध्याकाल में प्रतिभागियों, खासकर महिला प्रतिभागियों के घरों का भ्रमण किया जहाँ प्रतिभागी के अभिभावकों के साथ उनकी मुलाकात हुई।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.11. 2016
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)